2.6.1-2

ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान शास्त्री (B.L.I.Sc)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

i. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को नवीनतम तकनीक, पुस्तकालय प्रबंध, वर्गीकरण, कैटलॉगिंग, सूचना स्रोतों और पांडुलिपि विज्ञान के अध्ययन सहित पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित और मार्गदर्शन करना है।

ii. यह सूचना विज्ञान के ऐतिहासिक औरसैद्धांतिकआधारों का वर्णन करता है, जो छात्र को अच्छी तरह से पुस्तकालय के क्रियाकलाप को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त करेंगे और पुस्तकालय और सूचना केंद्र के प्रदर्शन की मूल्यांकन करने के लिए कौशल विकसित करेंगे, जिससे उनकी प्रदर्शन की व्यावसायिकता सुनिश्चित की जा सकेगी।

iii. छात्र पुस्तकालय और सूचना विज्ञान की सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक पहलुओं की गहरी समझ विकसित करे गया।

iv. छात्रको सूचना और इसके उपयोग के कानूनी, नैतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं के बारे में जागरूकता विकसित करेंगे, जिससे उनके उपयोग में जिम्मेदारी की भावना होगी।

v. छात्रो को उपयोगकर्ताओं की सूचना संचालन कौशलों को बढ़ाने के लिए पूर्णता प्राप्त की जाएगी, जिससे उन्हें सूचना संसाधनों का दक्षता से प्रयोग करने में समर्थ बनाया जा सकेगा।

vi. यह पाठ्यक्रम छात्रों को मजबूत और संघटित शिक्षा प्रदान करता है, जो पेशेवर क्षेत्र की तुरंत और दीर्घकालिक आवश्यकताओं को परिपूर्ण करता है।

पाठ्यक्रम के परिणाम

i. छात्र इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद विभिन्न पुस्तकालयों में निचले से लेकर मध्य स्तरीय प्रबंध पदों पर कार्य कर सकेंगे, चाहे वो शैक्षिक, सार्वजनिक, या विशेष क्षेत्र में हो।

ii. वे दैनिक पुस्तकालय संचालन, पुस्तकालय की सेवाओं का प्रबंध, और पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को संदर्भ, पुनर्प्राप्ति, और सूचना सेवाओं की दक्षता प्रदान करने के लिए तैयार होंगे।

iii. वे उपयोगकर्ताओं के छोटे समुदाय की आवश्यकताओं के लिए विशिष्ट सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली का डिज़ाइन और विकास करने में सक्षम होंगे।

iv. इससे छात्रो को पाण्डुलिपियों के आधार, भारत के प्रमुख प्राचीन लिपियों एवं उनके वर्गीकरण तथा सूचीकरण के परम्परागत विधियां का बोध होने के साथ साथ पाण्डुलिपियों का आधुनिक तकनीक से उनके संरक्षण एवं परिरक्षण से परिचय होगा।

Head
Department of Library and Information Science
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221002

कोर्स आउटकम

- पुस्तकालय के अवधारणा , प्रकार , विकास और समाज में महत्व, व्यावसायिक नैतिकता, पुस्तकालय विज्ञान के पंच सूत्र , पुस्तकालय नियम और पुस्तकालय संघों की भूमिका आदि से परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
- पुस्तकालय प्रबंधन के अवधारणा , सिद्धांत, विभिन्न विभागों की कार्य पद्धति, वित्तीय स्रोत,मानव संसाधन, पुस्तकालय सांख्यिकी तथा प्रतिवेदन आदि महत्वपूर्ण पुस्तकालय प्रबंधन गतिविधियों से अवगत होंगे ।
- पुस्तकालय वर्गीकरण के अवधारणा , कार्य, एवं आवश्यकता, विभिन्न पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति (दशमलव एवं द्विबिंदु वर्गीकरण), द्विबिंदु तथा दशमलव वर्गीकरण पद्धति के सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक पक्ष की ज्ञान की प्राप्ति होगी ।
- वर्गीकरण पद्धति (दशमलव एवं द्विबिंदु वर्गीकरण) का प्रयोगात्मक अभ्यास के द्वारा शीर्षकों का वर्गीकरण की तकनीक एवं कौशल का ज्ञान प्राप्ति होगा ,विभिन्न डिवाइसेस का उपयोग करने की विधि द्वारा काल नंबर का निर्माण तथा विभिन्न सारणियों का प्रयोग के ज्ञान प्राप्त कर वर्गीकरण में कौशल निपूर्ण होंगे तथा ज्ञान व्यवस्थापन में दक्ष होंगे ।
- पुस्तकालय सूचीकरण के अभिप्राय: ,प्रकार एवं विभिन्न स्वरूप तथा विकास एवं सूची संहिता के विभिन्न प्रावधानों के सैद्धांतिक रूप से अवगत होंगे एवं वर्तमान युग में सूचीकरण की दिशा में हो रहे परिवर्तन से भी परिचित होंगे।
- AACR-2 के प्रावधानों के अंतर्गत ग्रंथों, पत्रिकाओं तथा अन्यपाठ्य सामग्रियों के सूचीकरण अभ्यास के द्वारा सूचना पुनः प्राप्ति प्रक्रिया में दक्षता प्राप्त करेंगे ।
- सूचना स्रोत तथा पुस्तकालय प्रदत्त सेवाओं से अवगत होंगे एवं साथ-साथ सूचना स्रोत की मूल्यांकन मानदंड, एवं सूचना खोज के विभिन्न तकनीकों से भी अवगत होंगे, पुस्तकालय में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग एवं डिजिटल लाइब्रेरी के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
- पाण्डुलिपि विज्ञान के अवधारणा , विषय क्षेत्र एवं आधार से अवगत होंगे , पाण्डुलिपि खोज का इतिहास , प्राचीन भारतीय लिपियों तथा परम्परागत वर्गीकरण एवं सूचीकरण के संबंध में ज्ञान प्राप्त करेंगे, तथा पाण्डुलिपि के संरक्षण के महत्त्व एवं विभिन्न तकनीक तथा उपाय से भी अवगत होंगे ।

Head
Department of Library and Information Science
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221002

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी

तुलनात्मकधर्मदर्शनविभाग

(कार्यक्रम परिणाम एवं विशेष परिणाम)

(Program outcome and Specific Outcome)

तुलनात्मकधर्मदर्शनविभाग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में तीन पाठ्यक्रम सञ्चालित हैं -

1. दर्शन
2. तुलनात्मक दर्शन
3. तुलनात्मक धर्म

Programme outcome

- विश्लेषण और चर्चा के माध्यम से वर्तमान शोध का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता का विकास।
- संस्कृत पाठ के माध्यम से प्राचीन भारतीय धर्म, साहित्य, इतिहास के क्षेत्र में प्रासंगिक सैद्धांतिक दृष्टिकोण का विकास।
- तार्किक दृष्टिकोण से स्वयं के विचारों को प्रकट करने की क्षमता।
- लेखन कौशल व वाक्कौशल की योग्यता।

1. दर्शन - दर्शन विषय में भारतीय दर्शन के सभी प्रस्थानों चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्यायवैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त आदि का मूलरूप से ज्ञान प्रदान किया जाता है। इनके अध्ययन से अध्येता की दृष्टि विकसित होती है तथा सभी दर्शनों में क्या साम्य-वैषम्य इसका भी ज्ञान होता है। इस कोर्स के अध्ययन से व्यक्ति सामाजिक एकता, एवं समरसता स्थापित करने में सक्षम होता है।

11/10/23

दर्शनसंकायाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

11/10/23
प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

2. **तुलनात्मक दर्शन** - तुलनात्मक दर्शन विषय में प्राच्य दर्शन के साथ-साथ पाश्चात्य दर्शनों का भी अध्यापन होता है। इसके अध्ययन से कई प्राच्य एवं पाश्चात्य दार्शनिकों में एकता के सूत्र दृष्टिगोचर होते हैं। नागार्जुन एवं ब्रेडले, शङ्कराचार्य एवं स्पिनोजा, पाश्चात्य नीतिशास्त्र एवं मनोविज्ञान का भी अध्यापन होता है। इनके अध्ययन से अध्येता वैश्विक दर्शनों से परिचित होने के साथ ही उससे समन्वय का सूत्र खोजने में सफल होता है।

3. **तुलनात्मक धर्म** - तुलनात्मक धर्म विषय में भारतीय, पाश्चात्य एवं सामीय (सेमेटिक) धर्मों का तथा भारत के समकालिक सुधारवादी सम्प्रदायों का अध्यापन कराया जाता है। जिनके अध्ययन से अध्येता वैदिक काल से लेकर आज तक के धार्मिक विकास के साथ ही इस्लाम, इसाई तथा बहाई आदि धर्मों का भी अध्ययन करता है । परिणामतः धर्मों के सम्बन्ध में अध्येता के सभी सन्देह नष्ट होते है और सर्वधर्म समभाव की भावना उसमें प्रतिष्ठित होती है।

Specific Outcome

शास्त्री

1. दर्शन -

प्रथमाधिसत्रम्

चतुर्थ पत्र (तर्कभाषा) - तर्कभाषा के अध्ययन से छात्रों को न्याय पदार्थों का ज्ञान होता है।

पञ्चमपत्र (सर्वदर्शनसंग्रहः)

तार्किकदर्शनानि (चार्वाकः, जैनः, बौद्ध), **वैदिकदर्शनानि** (सांख्यः, योगः, न्यायः, वैशेषिकः) -

इन दर्शनों के अध्ययन से छात्रों में विभिन्न मत सम्प्रदायों की भिन्नता एवं समता समझने में सहायता मिलती है। एवं समाजिक समरसता स्थापित करने में वे सक्षम होते हैं।

द्वितीयाधिसत्रम्

11/10/23
दर्शनसकायाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

11/10/23
प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

चतुर्थ पत्र - वेदान्तसार

वेदान्तसार के अध्ययन से सम्पूर्ण वेदान्त दर्शन का सारतत्व ज्ञात होता है। इस ग्रन्थ के अध्ययन के बाद अध्येता सरलता से ब्रह्मसूत्र आदि वेदान्तशास्त्र के गहन ग्रन्थों का सरलता से अध्ययन कर सकता है।

पञ्चमपत्र (सर्वदर्शनसंग्रहः)

पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा, आगमिकदर्शनानि (शैव, वैष्णव)

इन दर्शनों के अध्ययन से छात्रों में विभिन्न मत सम्प्रदायों की भिन्नता एवं समता समझने में सहायता मिलती है। एवं समाजिक समरसता स्थापित करने में वे सक्षम होते हैं।

2. तुलनात्मक दर्शन

चतुर्थ पत्र

पाश्चात्यदर्शनम्

थेलीजतः अरस्तुपर्यन्तम्

इन पाश्चात्य दार्शनिकों के अध्ययन से छात्रों में दर्शन की वैश्विक दृष्टि का विकास होता है। एवं छात्र पश्चिमी दर्शन के ऐतिहासिक विकास से परिचित होंगे। वे ज्ञान और उसके बारे में पूर्व-सुकराती दार्शनिक सिद्धांतों से परिचित हो जाएंगे । छात्र तर्कवाद की अवधारणा से परिचित होंगे।

पञ्चमपत्रम्

इन पाश्चात्य दार्शनिकों के अध्ययन से छात्रों में दर्शन की वैश्विक दृष्टि का विकास होता है। साथ ही वे बुद्धिवाद एवं अनुभववाद जैसे सिद्धान्तों से परिचित होंगे जिससे उनमें तार्किक बुद्धि का विकास होगा।

11/10/23
दर्शनसंकायाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

11/10/23
प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

पाश्चात्यदर्शनम्

द्वितीयाधिसत्रम् (चतुर्थपत्रम्)

अर्वाचीनं मनोविज्ञानम्, पातञ्जलयोगदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से परिचित होंगें एवं ध्यान, शिक्षण, चिन्तन, बुद्धि एवं व्यक्तित्व के अर्थ को जानेंगे। साथ ही महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित योग दर्शन की अवधारणा को जानेंगे।

पञ्चमपत्रम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र समीक्षावाद, अस्तित्ववाद एवं मानवतावाद आदि के ज्ञान से परिचित होंगे।

3- तुलनात्मकधर्म

प्रथमाधिसत्रम्

चतुर्थपत्रम् (धर्मदर्शन की रूपरेखा एवं धर्मदर्शनम्)

इस पत्र के अध्ययन के द्वारा अध्येता धर्म की परिभाषा से , धर्म की उत्पति के सिद्धान्त से, धर्मों के विकास से, धर्मदर्शनों के सम्बन्ध, धर्म के लक्षण आदि के बारे में परिचित होगा। जिससे उसकी धर्म के विषय में एवं खुली दृष्टि का विकास होगा।

पञ्चमपत्रम् (संस्कारदीपकः, बौद्धधर्म के विकास का इतिहास, जैनधर्म)

इस पत्र के अध्ययन से छात्र सनातनधर्म के ऐतिहासिकविकास क्रम से परिचित होंगे। एवं संस्कारों के महत्व को जानेंगे। साथ ही बौद्धधर्म एवं जैनधर्म के इतिहास को जानेंगे।

द्वितीयाधिसत्रम्

चतुर्थपत्रम् (धर्मदर्शन - याकूब मसीह)

11/10/23

संकायाध्यक्ष

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

11/10/23

प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी

प्रोफेसर

तुलनात्मक दर्शन विभाग

इस पत्र के अध्ययन से छात्र सामिय (सेमेटिक) धर्मों से परिचित होगा। ईसाई, इस्लाम एवं यहूदी धर्म के सिद्धान्तों से अध्येता का परिचय होगा।

पञ्चमपत्रम् (बाइबिल(प्राचीन एवं नवीन नियम), सांस्कृतं कुराणम्, विश्वधर्मदर्शन)

इस पत्र के अध्ययन से छात्र इस्लाम, यहूदी एवं ईसाई धर्म के विचारों के विस्तार से जानेंगे जिससे उनमें वैश्विक दृष्टिकोण का विकास होगा एवं विश्व के विभिन्न धर्मों के विचारों से उनका परिचय होगा।

आचार्य

PROGRAMME OUTCOME

1. **दर्शन** - दर्शन विषय में भारतीय दर्शन के सभी प्रस्थानों चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्यायवैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त आदि का मूलरूप से विशिष्ट ज्ञान प्रदान किया जाता है। इनके अध्ययन से अध्येता की दृष्टि विकसित होती है तथा सभी दर्शनों में क्या साम्य-वैषम्य का भी ज्ञान होता है। इस कोर्स के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक एकता, एवं समरसता स्थापित करने में सक्षम होता है।

2. **तुलनात्मक दर्शन** - तुलनात्मक दर्शन विषय में प्राच्य दर्शन के साथ-साथ पाश्चात्य दर्शनों का भी विशेष अध्यापन होता है। इसके अध्ययन से कई प्राच्य एवं पाश्चात्य दार्शनिकों में एकता के सूत्र दृष्टिगोचर होते हैं। नागार्जुन एवं ब्रेडले, शङ्कराचार्य एवं स्पिनोजा, पाश्चात्य नीतिशास्त्र एवं मनोविज्ञान का भी अध्यापन होता है। इनके अध्ययन से अध्येता विस्तार से वैश्विक दर्शनों से परिचित होने के साथ ही उससे समन्वय का सूत्र खोजने में सफल होता है।

3. **तुलनात्मक धर्म** - तुलनात्मक धर्म विषय में भारतीय, पाश्चात्य एवं सामीय (सेमेटिक) धर्मों का तथा भारत के समकालिक सुधारवादी सम्प्रदायों का अध्यापन कराया जाता है। जिनके अध्ययन से अध्येता मुख्यरूप से वैदिक काल से लेकर आज तक के धार्मिक विकास के साथ ही इस्लाम, इसाई तथा बहाई आदि धर्मों का भी अध्ययन करता है ।

11/10/23
[stamp] संस्कृत वि. विद्यालय वाराणसी

11/10/23
प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

5

परिणामतः धर्मों के सम्बन्ध में अध्येता के सभी सन्देह नष्ट होते है, उसमें सभी धार्मिक दृष्टिकोणों का ज्ञान विकसित होता है और सर्वधर्म समभाव की भावना उसमें प्रतिष्ठित होती है।

SPECIFIC OUTCOME

आचार्य दर्शन

प्रथमाधिसत्रम् (मणिकणः)

इस ग्रन्थ के अध्ययन से छात्र न्याय दर्शन के तत्वचिन्तामणि ग्रन्थ की विषयवस्तु एवं विचारों से परिचित होंगे। जिसकी सहायता से छात्र नव्यन्याय से परिचित होंगे।

शिवदृष्टि

काश्मीर शैव ग्रन्थ पर आधारित इस ग्रन्थ के अध्ययन से छात्रों में शैव दर्शन के विचारों को समझने की क्षमता का विकास होता है।

मीमांसादर्शनम् (शाबरभाष्यम्) तर्कपाद

मीमांसा शास्त्र के ग्रन्थ का अध्ययन करके छात्र मीमांस दर्शन का विशेष ज्ञान प्राप्त करता है।

सांख्यप्रवचनभाष्यम्

इस ग्रन्थ के अध्ययन से मीमांसा दर्शन का विशिष्ट ज्ञान छात्र को प्राप्त होता है।

द्वितीयाधिसत्रम् (मूलमाध्यमिककारिका)

इस ग्रन्थ के अध्ययन से छात्र आचार्य नागार्जुन द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करता है एव प्रत्यय-तथागत-संस्कार-आत्मा-आर्यसत्य एवं निर्वाण प्रकरण का ज्ञान प्राप्त करता है।

द्रव्यसंग्रहः

11/10/23

11/10/23

प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

(6)

इस ग्रन्थ के अध्ययन से छात्र जैन दर्शन के छः द्रव्यों : जीव, पुद्गल, धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश और काल द्रव्य से परिचित होता है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थ है और जैन शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तत्त्वोपप्लवसिंह

यह चार्वाक दर्शन का एक प्रौढ ग्रन्थ है इस ग्रन्थ में चार्वाक दर्शन की विचारधारा को शास्त्रार्थ की पद्धति से स्पष्ट किया गया है। इस ग्रन्थ की सहायता से चार्वाक दर्शन की विचारधार से छात्र सम्यक्तया परिचित होता है।

यतीन्द्रमतदीपिका

यह विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रामाणिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है इसके अध्ययन से रामानुजाचार्य के सिद्धान्त स्पष्टतः बोध होता है।

तृतीयाधिसत्रम्

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यं भामतीसहितम् (तर्कपादमात्रम्),

यह अद्वैत दर्शन का एक प्रामाणिक ग्रन्थ है इसके ज्ञान से छात्र अद्वैत दर्शन के साथ-साथ अन्य भारतीय दर्शनों से भी परिचित होता है।

न्यायकुसुमाञ्जलिकारिका

यह ग्रन्थ नव्य न्याय एवं प्राचीन न्याय की कढी है । इस ग्रन्थ से ही नव्य न्याय का प्रारम्भ माना जाता है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से छात्र न्यायशास्त्र को विस्तार से जानेंगे। एवं नव्यन्याय के विचारों से परिचित होंगे।

शास्त्रदीपिका, योगसंग्रहः

इस पत्र के अध्ययन से छात्र मीमांसा दर्शन के सिद्धान्तों एवं योगदर्शन के सिद्धान्तों से परिचित होता है।

शम्भुनाथ शुक्ल
11/10/23
कुलसंकायाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

11/10/23
प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

7

चतुर्थाधिसत्रम्

ईशावास्योपनिषद् कठोपनिषद्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र भारतीय सनातन सभ्यता संस्कृति के महत्व से परिचित होते हैं। एवं सनातन संस्कृत के ज्ञान को करीब से जानते हैं।

विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः

इस ग्रन्थ के अध्ययन से छात्र बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय के विज्ञानवाद के विचारों से परिचित होता है।

स्वशास्त्रीयेतिहासः

इस पत्र में दर्शन शास्त्र सम्बद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों एवं दार्शनकों का अध्यापन किया जाता है इसके अध्ययन से अध्येता ऐतिहासिक दृष्टि से परिचित होता है।

स्वशास्त्रीयनिबन्धः

इस पत्र में विभिन्न दर्शनों के मुख्य मुख्य विषयों का अध्यापन किया जाता है जिससे अध्येता किस दर्शन में कौन-कौन मुख्य विषय हैं इससे परिचित होता है।

स्वशास्त्रीयवाक्परीक्षा

इसमे स्नातक एवं स्नातकोत्तर विषय से सम्बद्ध प्रश्न वाह्य विशेषज्ञों द्वारा पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का प्रत्यक्ष रूप से परीक्षण होता है और उसी मूल्याङ्कन के अनुरूप अंक प्रदान किये जाते हैं।

आचार्य तुलनात्मक दर्शन

प्रथमाधिसत्रं एवं द्वितीयाधिसत्रम्

आधुनिकपाश्चात्यदर्शनम्

11/10/23

11/10/23

प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

इस पत्र के अध्ययन से छात्र आधुनिक पाश्चात्यदर्शन के वैशिष्ट्य से परिचित होंगे एवं पाश्चात्य विद्वानों के विचारों को जानेंगे।

धर्मदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र धर्मदर्शन की विषयवस्तु से परिचय होंगे। तथा उनमें धर्म के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण का विकास होगा।

स्पिनोजाशाङ्करदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से अध्येता स्पिनोजा एवं ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य का विवेचनात्मक अध्ययन कर उनके साम्य वैषम्य एवं विशेषताओं से परिचित होंगे जिससे अध्येता में प्राच्य पाश्चात्य दर्शनों के प्रति विवेचनात्मक भाव का विकास होता है।

वसुबन्धुबर्कले दर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र बौद्ध दर्शन विज्ञानवाद के प्रणेता वसुबन्धु एवं पाश्चात्य दार्शनिक बर्कले दर्शन का अध्ययन कराया जाता है जिससे अध्येता की प्राच्य-पाश्चात्य दार्शनिक दृष्टि विकसित होती है।

तृतीयाधिसत्रम्

समकालीनपाश्चात्यदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र दार्शनिक ब्रैडले, मूर, रसल, विट्गेस्टाइन द्वारा प्रतिपादित विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन कर पाश्चात्य दर्शन के समकालीन विचारों से परिचित होंगे। जिससे अध्येताओं में वैश्विक दृष्टिकोण का विकास होता है।

समाकालीनभारतीयदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र समकालीन भारतीय दार्शनिक विचारों के माध्यम से भारतीय दार्शनिक दृष्टि से परिचित होंगे। जिससे अध्येता में समकालीन भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण रूपी तार्किक दृष्टि का विकास होता है।

नागार्जुनब्रैडलेदर्शनम्

11/10/23

11/10/23

प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

इस पत्र के अध्ययन से छात्र बौद्ध दर्शन के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं शून्यवाद के जनक नागार्जुन एवं पाश्चात्य दार्शनिक ब्रैडले के विचारों में साम्य वैषम्य से परिचित होंगे तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा।

पर्यावरणदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से अध्येता पर्यावरण एवं उसके सामान्य जनजीवन पर प्रभाव का विवेचनात्मक अध्ययन कर, पर्यावरण के प्रभाव से परिचित होंगे।

चतुर्थाधिसत्रम्

समकालीनपाश्चात्यदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र दार्शनिक ब्रैडले, मूर, रसल, विट्गेंस्टाइन द्वारा प्रतिपादित विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन कर पाश्चात्य दर्शन के समकालीन विचारों से परिचित होंगे। जिससे अध्येताओं में वैश्विक दृष्टिकोण का विकास होता है।

समाकालीनभारतीयदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र समकालीन भारतीय दार्शनिक विचारों के माध्यम से भारतीय दार्शनिक दृष्टि से परिचित होंगे। जिससे अध्येता में समकालीन भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण रूपी तार्किक दृष्टि का विकास होता है।

नागार्जुनब्रैडलेदर्शनम्

इस पत्र के अध्ययन से छात्र बौद्ध दर्शन के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं शून्यवाद के जनक नागार्जुन एवं पाश्चात्य दार्शनिक ब्रैडले के विचारों में साम्य वैषम्य से परिचित होंगे तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा।

स्वशास्त्रीयनिबन्धः

11/10/23
संकायाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

11/10/23
प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी
प्रोफेसर
तुलनात्मक दर्शन विभाग

इस पत्र में विभिन्न दर्शनों के मुख्य मुख्य विषयों का अध्यापन किया जाता है जिससे अध्येता किस दर्शन में कौन-कौन मुख्य विषय हैं इससे परिचित होता है।

स्वशास्त्रीयवाक्परीक्षा

इसमे स्नातक एवं स्नातकोतर विषय से सम्बद्ध प्रश्न बाह्य विशेषज्ञों द्वारा पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का प्रत्यक्ष रूप से परीक्षण होता है और उसी मूल्याङ्कन के अनुरूप अंक प्रदान किये जाते हैं।

आचार्यप्रथमवर्ष

तुलनात्मक धर्म

1. इस विषय में वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म इस्लाम धर्म, इसाई धर्म, बहाई धर्म आदि प्रमुख धर्मों का अध्ययन करने से अध्येता में एक वैश्विक दृष्टि का विकास होता है।
2. विभिन्न धार्मिक परंपराओं से संबंधित मान्यताओं, रीतिरिवाजों-, ग्रंथों और आंकड़ों की समझ विकसित होती है।
3. प्रमुख धार्मिक परंपराओं की बुनियादी शिक्षाओं और प्रथाओं की समझ प्राप्त होगी और उनके बीच सैद्धांत समानताओं और मतभेदों की तुलना और अंतर करने में अध्येता सक्षम होगा। उसको विदित होगा कि धर्म किस प्रकार मानव अनुभव और ज्ञान के अन्य आयामों, जैसे लिंग, नस्ल, राजनीति से प्रभावित होता है, कैसे धर्मों का उपयोग सामाजिक संरचनाओं और संस्थानों के समर्थन और आलोचना दोनों के लिए किया जाता है।
4. विश्व के धर्मों के अध्ययन से संबंधित सामग्रियों और ग्रंथों को पढने, विश्लेषण करने और व्याख्या करने की क्षमता विकसित होगी।

11/10/23

11/10/23

प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी

2.6.2

अपेक्षित परिणाम
विद्यावारिधि

उद्देश्यः-

- नये सिद्धान्तों की खोज।
- खोजे गये सिद्धान्तों का प्रमाणीकरण।
- पुराने ज्ञान का परिमार्जन।
- अस्पष्ट तथ्यों को स्पष्टरूप देना।
- अनिश्चित तथ्यों का निश्चयीकरण।
- सामाजिक जीवन की भ्रान्त धारणाओं से सम्बन्धित तथ्यों का संशोधन आदि।
- अन्तर्विषयक एवं बहुविषयक शोध।

अपेक्षित परिणाम

- शोधविषय चयन प्रक्रिया का ज्ञान।
- शोधसंज्ञा, शोधप्रकृति, शोधपरिसर,तथ्यसंग्रहण आदि विषयों का ज्ञान।
- संस्कृत शोधपत्रिका का ज्ञान।
- अन्तर्विषयक एवं बहुविषयक शोध पत्रों का लेखन एवं प्रकाशन प्रविधि का ज्ञान।
- ताडपत्रादिमातृका सम्पादन में शोधकर्ता का कर्तव्य।
- लित्यन्तरीकरण में वर्ण संकेत विधि का ज्ञान।
- समीक्षात्मकग्रन्थसम्पादन प्रविधि का ज्ञान।
- मुद्रण संशोधविधि का बोध।
- प्लेगेरिज्म से सम्बद्ध नियमों एवं प्रविधि का ज्ञान।

आचार्य

- प्रौढ़ शास्त्रों का तलस्पर्शी ज्ञान।
- पठित शास्त्रों के माध्यम से लोक कल्याण।
- शास्त्रज्ञान के साथ व्यवहारिक कुशलता।

अपेक्षित परिणाम-

- शास्त्रों की अभिव्यक्ति संस्कृत माध्यम से।
- संस्कृत में पठन-पाठन तथा लेखन में कुशलता।
- संस्कृत में लिखे हुए गूढतम शास्त्रों को समझने का सामर्थ्य।
- भारतीय चिन्तन परम्परा को आत्मसात करना।
- पठित शास्त्रों से सामाजिक सकारात्मक परिवर्तन।

शास्त्री

- सम्बद्ध शास्त्रों का अवगमन।
- संस्कृत में लिखे हुए शास्त्रों का परम्परा पूर्वक ज्ञान।